

समाचार वाणी

खबर जो करें असर !

नाशिक | Wednesday, 09 September 2026

धनखड़ ने सी.पी. राधाकृष्णन के शपथ ग्रहण में की शिरकत, उपस्थिति से कई हुए हैरान, कई हुए मौन

Publisher

Published on 13 Sep 2025



हैदराबाद में हाल ही में आयोजित एक विशेष समारोह ने राजनीतिक गलियारों में चर्चा का नया विषय पैदा कर दिया। यह अवसर था वरिष्ठ नेता और केंद्र सरकार में अपनी पहचान बना चुके **सी.पी. राधाकृष्णन** के शपथ ग्रहण समारोह का। लेकिन इस अवसर को खास बनाने वाला क्षण वह था जब भारत के उपराष्ट्रपति **जगदीप धनखड़** स्वयं वहां उपस्थित हुए।

आमतौर पर उपराष्ट्रपति का इस प्रकार के कार्यक्रमों में शामिल होना दुर्लभ माना जाता है। लेकिन धनखड़ की इस उपस्थिति ने समारोह को न केवल गरिमामयी बना दिया बल्कि राजनीतिक हलचलों को भी जन्म दिया। कई लोगों के लिए यह उपस्थिति आश्चर्य का विषय रही, जबकि कुछ ने इस पर मौन साध लेना ही उचित समझा।

सी.पी. राधाकृष्णन लंबे समय से दक्षिण भारतीय राजनीति का एक अहम चेहरा रहे हैं। उनकी सादगीपूर्ण छवि और संगठनात्मक पकड़ ने उन्हें हमेशा अलग पहचान दी है। शपथ ग्रहण समारोह में उनका जोश और समर्थकों का उत्साह यह स्पष्ट कर रहा था कि राधाकृष्णन की लोकप्रियता अब भी बरकरार है।

लेकिन उपराष्ट्रपति धनखड़ की अप्रत्याशित उपस्थिति ने इस पूरे कार्यक्रम को राष्ट्रीय स्तर पर महत्वपूर्ण बना दिया। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि धनखड़ की मौजूदगी केवल औपचारिकता नहीं बल्कि एक “राजनीतिक संकेत” भी हो सकती है।

समारोह में कई स्थानीय और राष्ट्रीय नेता मौजूद थे। जब धनखड़ मंच पर आए, तो दर्शकों में हलचल मच गई। उनके इस कदम ने कई नेताओं को आश्चर्यचकित कर दिया। कुछ लोगों ने इसे भाजपा की रणनीतिक चाल माना तो कुछ ने इसे एक शिष्टाचारिक कदम के रूप में देखा।

हालांकि, राजनीतिक प्रतिद्वंद्वी दलों के कई नेता इस पर चुप रहना ही बेहतर समझते दिखे। विपक्षी नेताओं ने इस घटना पर कोई सीधा बयान नहीं दिया, लेकिन बंद दरवाजों के पीछे इस उपस्थिति को लेकर चर्चाएँ तेज हो गईं।

जगदीप धनखड़ अब तक अपनी सख्त लेकिन स्पष्टवक्ता छवि के लिए जाने जाते हैं। संसद में भी उन्होंने कई मौकों पर विपक्ष और सत्ता पक्ष दोनों को अपनी बेबाक राय से चौंकाया है। उनका राधाकृष्णन के शपथ ग्रहण में पहुँचना यह संदेश दे सकता है कि उपराष्ट्रपति की भूमिका केवल संवैधानिक सीमाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि वह राजनीतिक परिस्थितियों पर भी नजर बनाए रखते हैं।

भाजपा नेताओं ने इस उपस्थिति को “सामान्य और स्वाभाविक” बताते हुए ज्यादा महत्व नहीं दिया। उन्होंने कहा कि राधाकृष्णन और धनखड़ दोनों ही पार्टी के वरिष्ठ और आदरणीय नेता हैं। ऐसे में उपराष्ट्रपति का समारोह में शामिल होना स्वाभाविक है।

दूसरी ओर, विपक्ष ने भले ही इस पर खुलकर कुछ न कहा हो, लेकिन अंदरूनी हलकों में इसे “राजनीतिक शक्ति प्रदर्शन” बताया जा रहा है। उनका मानना है कि इस कदम से भाजपा यह संदेश देना चाहती है कि पार्टी के वरिष्ठ नेताओं के साथ राष्ट्रीय स्तर का नेतृत्व मजबूती से खड़ा है।

सोशल मीडिया पर भी इस घटना को लेकर जमकर प्रतिक्रियाएँ आईं। कई लोगों ने धनखड़ की उपस्थिति को सराहा और इसे भारतीय लोकतंत्र की “समावेशी परंपरा” कहा। वहीं, कुछ यूजर्स ने इसे राजनीतिक संदेश देने का प्रयास माना। ट्विटर और फेसबुक पर “धनखड़” और “राधाकृष्णन” दोनों ही ट्रेंडिंग में बने रहे।

अब सवाल यह है कि क्या यह उपस्थिति केवल एक संयोग था या इसके पीछे कोई बड़ा राजनीतिक संदेश छिपा है। राजनीतिक जानकार मानते हैं कि वर्तमान समय में दक्षिण भारत की राजनीति भाजपा के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। ऐसे में उपराष्ट्रपति का इस क्षेत्र के वरिष्ठ नेता के शपथ ग्रहण में शामिल होना निश्चित रूप से राजनीतिक महत्व रखता है।

सी.पी. राधाकृष्णन का शपथ ग्रहण समारोह वैसे तो एक औपचारिक आयोजन था, लेकिन उपराष्ट्रपति धनखड़ की उपस्थिति ने इसे असाधारण बना दिया। यह घटना भारतीय राजनीति में शक्ति संतुलन और राजनीति के नए संकेत दे रही है। आने वाले समय में यह देखना दिलचस्प होगा कि इस उपस्थिति का असर क्षेत्रीय और राष्ट्रीय राजनीति पर कैसे पड़ता है।